फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव
डॉ. संतोष कुलकर्णी
डॉ. रणजीत जाधव
डॉ. हणमंत पवार

23. 'मैला आँचल' : ग्रामीण संस्कृति का प्रतिबिंब 127
डॉ. परविंदर कौर महाजन

24. 'मैला आँचल' में चित्रित राजनीतिक यथार्थ 131
डॉ. सुजितसिंह परिहार

25. 'मैला आँचल' नामकरण की सार्थकता 139
डॉ. दीपक पवार

26. ग्रामीण संवेदना के कथाकार रेणु 143
डॉ. पुष्पा गोविंद गायकवाड

27. रेणु का भाषा वैभव 151
डॉ. गोपाल यतिराज बाहेती

28. स्वाधीनता की चेतना और युवा मन : 'कितने चौराहे' 158
डॉ. सतीश यादव

29. 'कितने चौराहे' उपन्यास का मनमोहन 166
योगेश्वर रामजी कु-हाडे

30. कितने चौराहे : एक संस्कार प्रधान उपन्यास 172
इंदलकर सुभाष शंकरराव

31. 'परती परिकथा' के स्त्री पात्र 175
नयन भादुले-राजमाने

32. 'परती परिकथा' उपन्यास में आँचलिक संवेदना 181
डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे, डॉ. संतोष विजयकुमार येरावार
डॉ. शेख रजिया शहेनाज शेख अब्दुला

33. फणीश्वरनाथ रेणु का 'परती परिकथा' : आँचलिक पात्र जितेन 185
डॉ. संजय गणपती भालेराव

34. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में पुरुष पात्र 192
डॉ. अर्चना चंद्रकांतराव पत्की

35. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास एवं भाषा-शैली सौंदर्य 197
(परती परिकथा उपन्यास के संदर्भ में)
डॉ. हणमंत पवार

'परती परिकथा' के स्त्री पात्र

नयन भादुले-राजमाने

साहित्य मानव जीवन से पृथक होकर अपने अस्तित्व का निर्माण नहीं कर सकता और स्त्री मानव जीवन का प्रमुख अंग है। इसलिए कहा जा सकता है कि स्त्री और साहित्य का शा'वत सम्बन्ध है। स्त्री किसी भी वर्ग या स्तर की हो उसकी समस्याए उन्हें एक ही बिन्दू पर लाकर जोड़ देती है। "स्त्री समाज एक ऐसा समाज है वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि संकुचित सीमाओं के पार जाता है और जहाँ कहीं दामन है, चाहे जिस वर्ग, जिस नस्ल की स्त्री त्रस्त है- वह उसे अपने परचम के नीचे लेता है।"[1] उपन्यास के प्रारम्भ से ही स्त्री-जीवन के विभिन्न पक्षों को लक्षित किया जाने लगा था। इस संदर्भ में मैनेजर पाण्डे का कहना है,"उपन्यास ने अपने उदयकाल से ही स्त्री पराधीनता के बोध और स्वतन्त्रता की आव'यकता की ओर संकेत किया है।"[2]

सभी प्रसिद्ध रचनाकारों ने आधुनिक संस्कृति की धारा के साथ अपने आपको जोड़कर राष्ट्रीयता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सामाजिक-वैज्ञानिक मानसिकता, मानवीयता जैसे आधुनिक मूल्यों को अपनी रचनाओं में ग्रहण किया। फणीश्वरनाथ रेणु ने इस परम्परा को आत्मसात करने के साथ-साथ समाज की जड़ों में जाकर जीवन के नये कीर्तिमान स्थापित किये है। इस कारण उनके साहित्य में स्त्री-जीवन का सूक्ष्म अवलोकन मिलता है। 'स्त्री-प्रश्न' को स्पष्ट करते हुए जॉन स्टुअर्ट मिल ने कहा है, "परिवार, मातृत्व और शिशुपालन सहित समस्त सामाजिक गतिविधियों एवं संस्थाओं में स्त्रियों की भूमिका, अन्य सामाजिक, आर्थिक शोषण उत्पीड़न और स्त्री-मुक्ति से जुड़ी सभी समस्याओं का जटिल समुच्च हैं-स्त्री प्रश्न।"[3] रेणु जब उपन्यासों का सृजन कर रहे थे, तब स्त्री समस्याएं और जटिल थी। ग्रामीण स्त्री अपनी स्थिति को नियति मानकर जी रही

थी। मध्यमवर्गीय स्त्री तो स्वतंत्रता की ओर अग्रसर हो रही थी, लेकिन ग्रामीण स्त्री अब भी अपने में ही सिमटी हुई थी।

इस समय उपन्यासों पर 'व्यक्ति स्वतंत्रता'की अवधारणा पूरी तरह हावी थी। स्त्री एक व्यक्ति के रूप में पहचानी जाने लगी थी। उनकी भिन्नता वर्गगत थी। रेणु ने इस दौर के स्त्री विषयक मतों से भिन्न अपनी स्वतंत्र स्त्री-दृष्टि का परिचय दिया। उन्होंने मुख्यतः ग्रामीण निम्नवर्गीय स्त्री को अपने उपन्यासों में विशेष स्थान दिया। रेणु ने सीमोन द बोउवार कथन के अनुसार " औरत को औरत होना सिखाया जाता है।"4 इस विचार से ही स्त्री समुदाय को पेश किया है। रेणु स्वातंयोत्तर समाज के स्त्री की स्थिति को उजागर कर भारतीय समाज के समक्ष प्रश्न खड़ा कर रहे थे। रेणु के पात्र निम्नवर्गीय, हरिजन, किसान, लोहार, बढ़ई, चर्मकार, कर्मकार आदि हैं। इन्होंने साधारण पात्रों की जीवन कथा की रचना की है।

रेणु की साहित्यिक विशेषताओं को अगर हम देखे तो–

- इन्होंने ग्रामीण आँचल को अपनी रचनाओं की विषयवस्तु को आधार बनाया।
- ये अपनी रचनाओं में गहरी संवेदना के कारण जनता की पीड़ा को स्वयं भोगने से जान पड़ते है।
- इनकी रचनाओं में आंचलिक कलाकारों, स्त्रियों और मज़दूरों के चित्र मिलते हैं।
- अपनी रचनाओं के व्दारा रेणु बदलते सामाजिक यथार्थ को पकड़ने में विशेष पहचान रखते हैं।
- इनकी रचनाओं में आंचलिक लोकसंगीत की गूँज सुनाई देती है।

रेणु वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करते हुए कथा के पात्रों को लुभावना बना देते हैं आदि विशेषताएँ रेणु की साहित्यिक लेखन की दिखाई देती हैं।

'परती परिकथा' फणीश्वरनाथ रेणु का 1954 में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित उपन्यास है। मैला आँचल के बाद रेणु का यह दूसरा आंचलिक उपन्यास है। इस उपन्यास में भी नायकत्व किसी खास पात्र के बजाय अंचल को ही माना गया है। जीतेन्द्र मिश्र को नायकत्व के करीब माना जाता है। या यूँ कह सकते कि आंचलिकता को धारण करते हुए भी इस कहानी में मिश्र परिवार ही केंद्रीय तत्व हैं। इसमे परानपुर गाँव कथा के केंद्र में है। गाँव में जातियों और उपजातियों

की स्थिति वैसे ही है। विभिन्न सरकारी योजनाओं, ग्राम समाज सुधार और विकास योजनाएं, जमींदारी उन्मूलन, लैंड सर्वे ऑपरेशन, कोसी योजना आदि के प्रति लोगों में अपार उत्साह है। उपन्यास का नायक जितेन्द्र (जित्तन) अपने निजी अनुभव से राजनीति की कटुता और षड़यंत्र को बुरा समझता है और सदा उससे दूर रहता है, लेखक ने इसे ही एक आदर्श स्थिति मानकर प्रस्तुत किया है। परती परिकथा के कथा सूत्र जित्तन और उसके पिता शिवेंद्र नाथ मिश्र से जुड़कर ग्राम समाज के प्रतिनिधि अंकन को एक रोचक प्रेम कथा में परिवर्तित कर देते हैं। इस उपन्यास को हम उपन्यास से ज्यादा एक कथाचित्र, या फिर एक महाकाव्यात्मक उपन्यास मान सकते है, क्योंकि पूरी किताब में भाषा से ज्यादा वहाँ की बोली और साथ ही वहाँ के वातावरण में गूंजते गीत संगीत, सांस्कृतिक परम्पराओं को इस तरह पिरोया गया है कि इसमें हम मात्र किसी व्यक्ति विशेष की कथा नहीं पढ़ रहे होते हैं बल्कि ग्रामीण परिवेश, वहाँ के लोगों के आचार-व्यवहार, उनकी सोच समझ को भी अच्छी तरह समझ पाते हैं। यह उपन्यास तात्कालीन पूर्णिया अंचल के परानपुर गाँव के राजनितिक, पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन से एक सटीक दस्तावेज के रूप में उभरा है। इस उपन्यास में चित्रित तात्कालिन समाज का हर वर्ग अपने हक के लिए जागरूक दिखाई पडता है। यह जमींदारी उन्मूलन के तात्कालिक प्रभाव, लैंड सर्वे सेटलमेंट के जरिए हर व्यक्ति को उसके हिस्से के हक, भूदान आंदोलन, दलितों और पिछड़ों के सर उठाने, आम जनमानस में उठते राजनैतिक चेतना, उपेक्षित वर्ग की महिलाओं तक शिक्षा के प्रचार-प्रसार, लोकतन्त्र के चौथे स्तंभ मीडिया के बढ़ते प्रभाव के साथ-साथ परानपुर की स्थानीय भाषा, लोक परम्परा, लोक गीत इन सब को संजोए हुए एक महाकाव्य की तरह है। जिसमें दो पीढ़ियों की बहुत ही रोचक कथा को कहने के लिए सुरपति राय भवेश, और उनके हाथ लगे मिसेज रोज़उड की डायरी और पत्रों का इस्तेमाल करते हुए फ्लैशबैक तकनीक का भी बखूबी इस्तेमाल हुआ है। इस उपन्यास में बहुत सारे पात्र हैं। सैकड़ों पात्र पर कोई भी पात्र लदा हुआ नहीं है। हर पात्र की अपनी विशेषता है।

उपन्यास के लोकार्पण जलसे में बोलते हुए आलोचक शिवदान सिंह चौहान कहते हैं "यह हिंदी का अब तक का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है, इसे सर्वश्रेष्ठ भारतीय उपन्यासों में रखा जा सकता है और पाश्चात्य साहित्य में इस बीच (यानी पांच-सात वर्षोंमें) जो महत्वपूर्ण उपन्यास प्रकाशित हुए हैं उनमें से किसी से भी यह टक्कर ले सकता है।"[5]

'परती परिकथा' उपन्यास के स्त्री पात्रों में ताजमनी, मलारी, गीता मिश्रा और इरावती प्रमुख हैं। ताजमनी ब्रजभाषा कालीन नायिका है, तो मलारी-दि हरिजन ग्लौरी। "दौ दीपों की तरह जगमगा रही दोनों दिखाई देती है। एक नट्टिन टोली में दूसरी मोची टोले के बीच"[6] ताजमनी की चरित्र बड़ा ही भव्य और उत्साहपूर्ण है। यह रेणु की अन्यतम उपलब्धि है। वह जितेन्द्र की रक्षिता होकर भी उसकी मृत माँ की स्मृति और उसकी संम्पूर्ण आत्मा की रक्षिता बन गई है। जीवन की विवश घड़ियों में भी वह अपने नैतिक स्तर को नहीं छोड़ती। जब कभी भी जितन मन टूटने लगता है वह अपने स्नेह, त्याग और कर्मठता का सम्मोहन फैलाकर उसे बचा लेती है।

"सुन्दरता की दृष्टि से सारे परानपुर गाँव के लोग मानते हैं। ताजमनी अद्वितीय सुन्दरी है, सुड़ौल शरीर और सुघड़ बनावट, चम्पई रंग और बालिका सुलभ चेहरा। मेघवर्ण कुचित केशपाष! आँखों में परिपूर्ण प्राण की गम्भीर छाया ..अजान-सुजान उसे शोडषी समझते हैं। किन्तु गाँव की सोलह वर्षीय कन्याओं से वह बीस साल बड़ी है।'[7] इस तरह हम देखते हैं की धूसर, वीरान, अन्नहीन प्रान्तर में ताजमनी आस्था का मरूदीप बनकर जल उठ़ी है।

'मलारी' ताजमनी की तरह सौन्दर्य की मूर्ति है। नीच कुलोत्पन्ना होकर भी वह उच्च शिक्षिता है और नई किरणों की संवाहिका है। नागरिक जीवन के परिमार्जित संस्कार और ग्राम्य जीवन की सरलता दोनों का संगम ही मलारी के जीवन का मूल केन्द्र है।

"मिसेज रोजवुड अर्थात गीता मिश्रा तो पूरब पगली है।"[8] वह एक विलक्षण प्रेमिका है। अपने पाश्चात्य संस्कार की समस्त गरिमा का लात मारकर ब्रज की गलियों की कंकड़ी बनकर भारतीय गोचारण परम्परा की प्रेमी है। वह शिवेन्द्रनाथ मिश्र की ओर इसलिए नहीं झुकती क्योंकि उसमे पौरूष है, बल्कि इसलिए उसकी ओर आकर्षित होती है क्योंकी उस मिश्र 'में उसे जन्म-जन्मान्तर की पुरातन भारतीय संस्कृति के प्रति असाधारण रूझान की संतुष्टि मिलती है। शिवेन्द्र मिश्र से प्रथम परिचय में ही उसकी झलक से वह प्रभावित हो जाती है और अन्य लोगों को बाघ की तरह भयभीत करने वाला शिवेन्द्र मिश्र उसे 'माखन मन वाला' दिखाई देता है। वह शिवेन्द्र मिश्र की दीवानी हो जाती है और अपना सर्वस्व उसके उपर न्योछावर कर देती है। वह धर्म परिवर्तन कर हिन्दू हो जाती है, और भारतीय पत्नी के संस्कारों का जीवन्त प्रतीक बन जाती है।

'इरावती' भी प्रस्तुत उपन्यास की एक करूण पात्र है। पाठकों की सहज संवेदना प्राप्त करनेवाला यह पात्र एकान्त पसन्द करता है। वह दिनभर अपने आपको लिखने में व्यस्त रखती है तथा कभी-कभी विशाल निर्जन मैदान को, दूर तक फैली हुई वन्ध्या धरती के आँचल को देखती रहती है। कटी हुई पतंग की तरह उड़ती है इरावती। उसके मन का भ्रम बढ़ता ही जाता है। दस महिने में ही उसने तीन राजनैतिक दलोंसे अपना रिश्ता जोड़ा और तोड़ा। कहीं भी चैन नहीं है उसे। ना किसी पर विश्वास। लोंगों ने कहा "माथा खराब हो गया है।"[10] उसके चरित्र के भविष्य में तरह-तरह की बातें उड़ाने वाले लोगों ने उसकी इज्जत के साथ खेलना चाहा। वह जहाँ गई, वासना के भूखे कीड़े ही उसे सर्वत्र दिखाई दिए। उसके राजनैतिक भैयाजी, जो आदर्शों की ऊँची, ऊँची बातें करते हैं,ट्रेन के डिब्बे में ही सफर के दौरान उसकी इज्जत लुटने का उपक्रम करते हैं। वह सोचने लगती है," मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि इन्सान कत्ल और बलात्कार करने के सिवा और कुछ कर सकता है।"[11] परन्तु जितेन्द्र के सानिध्य में उसका प्यार पुनः पनपता है, उसकी विचारधारा पुनः परवर्तित होती है। डॉ.राम चौधरी जैसे उदार हृदय व्यक्ति का निश्चल पितृतुल्य प्रेम उसके टूटते मन को सहारा देता है। वह गाँव आकर जितेन्द्र के लोक मंच के स्वप्न को साकार करती है।

स्त्री-दृष्टि के संदर्भ में देखा जाए तो रेणु ने यह स्पष्ट किया है कि ग्रामीण स्त्री किस प्रकार विकास की इस प्रक्रिया से बाहर है। पितृसत्ताक व्यवस्था के सामने स्त्री की भूमिका नगण्य होती है। उसका अस्तित्व शून्य होता है। पुरूष समाज में यहाँ मध्यमवर्गीय स्त्रियाँ अपने अस्तित्व को लेकर सजग दिखाई देती है वहीं ग्रामीण स्त्री के लिए उसके अस्तित्व का नियामक पुरूष ही रहा है। पुरूष समाज द्वारा बनाई गई विकास-योजनाओं में स्त्री की भूमिका और जरूरत को नज़र अंदाज किया गया। रेणु ने आंचलिकता के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से इन प्रश्नों को खड़ा किया है। अंतः रेणु ने स्त्री शोषन, उत्पीड़न की अभिव्यक्ति के तरीकों, समाज में स्त्री का स्थान और ग्रामीण स्त्री का सत्य, स्वतंत्रता प्राप्ति और स्वंतत्रता के दौर में स्त्री की स्थिति, लोक-संस्कृति में स्त्री की भूमिका जैसे अनेक विषयों की तरफ पाठकों का ध्यान आकर्षित करने का सफल प्रयास किया है। इतना ही नहीं स्त्री-जीवन के संघर्ष के साथ-साथ स्त्री मन की कोमलता, प्रतिभा, सांस्कृतिक सम्पन्नता आदि उसके जीवन के अनेक पहलुओं को उजागर किया है। रेणु का कालजयी उपन्यास परती परिकथा, आज़ाद भारत के गाँवों के टूटने-बिखरने और इसके बीच बनने की कोशिशों की शुरूआती दास्तान है।

संदर्भ

1. स्त्रीत्व का मानचित्र, अनामिका, सारांश प्रकाशन दिल्ली, पृ.स.1 5,
2. आलोचना की सामाजिकता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 253,
3. स्त्रियों की पराधीनता, राजकमल विश्व क्लासिक, पृ.सं. 10.
4. द सेंकड सेक्स- अनुवाद स्त्री उपेक्षिता, प्रभा खेतान, पृ. सं. 19.
5. शिवदान सिंह चौहान, परती परिकथा का लोकार्पण जलसा.
6. परती परिकथा, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, पृ.सं. 66.
7. परती परिकथा, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, पृ.सं. 65.
8. परती परिकथा, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, पृ.सं. 204.
9. परती परिकथा, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, पृ.सं. 219.
10. परती परिकथा, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, पृ.सं. 225.
11. परती परिकथा, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, पृ.सं. 226.